शोध पत्र– xg foKku

# Hkjox< dh vkfFkd fLFkfr dk ifjp; o Nikbl dkjhxjk dh leL;kvk dk v/;;u

* Mk- e/kckyk oek ** d- vfdrk Qktnkj

* ik/;kid xg foKku] 'kkldh; xhrk tyh dU;k ih- th- egkfo|ky;] Hkkiky
** 'kk/k Nk=k] xg foKku ldk;] cjdrmYYkk fo'0kfo|ky;] Hkkiky

सांरसः– भैरवगढ़ की आर्थिक स्थिति का परिचय व छपाई कारीगरों की समस्याओं का अध्ययन हेतु 40 छीपाओं का चयन किया गया इसके लिए साक्षात्कार व अवलोकन विधि का प्रयोग किया। तथ्यों का अध्ययन करके ज्ञात हुआ कि छपाई कारीगरों को विभिन्न समस्याओं जैसे कच्चे माल की समस्या.छपाई हेतु ठप्पों की समस्या. ऋण संबंधी जानकारी का आभाव. प्रचार प्रसार का आभाव .निर्माण हेतु अपूर्ण जानकारी. यातायात (ट्रांसपोर्ट) की समस्या .इन्फ्रास्ट्राम्चर की समस्या .स्वास्थ्य एवं चिकित्सा की समस्या है। जो कि उनके उत्पादन की क्षमता को कम करती है। और छीपाओं की vkfFkd स्थिति को कमजोर करती जा रही है।

## iLrkouk&

भारत के विभिन्न राज्य अपनी अलग अलग कलाओं के लिए प्रसिद्व है। इनमें से एक राज्य है मध्यप्रदेश। भारत का प्राचीन धार्मिक तथा एतिहासिक महत्तव को शहर उज्जैन भी मध्यप्रदेश में स्थित है।

उज्जैन क्षिप्रा नदी के पूर्वीतट पर स्थित है। उज्जैन से 7 किलोमीटर की दूरी पर भैरवगढ़ स्थित है जो कि उज्जैन का वार्ड नं. 1 है यहॉ पर परम्परागत वस्त्र छपाई का कार्य किया जाता है। जिसमें बंधेज, वाटिक ,ब्लॉक प्रिंटिग, व स्कीन प्रिंटिग है। लेकिन यहॉ पर मुख्य तौर पर वाटिक प्रिंटिग व स्कीन प्रिंटिग का कार्य किया जा रहा है। भैरवगढ़ मे प्रमुख रूप से मुशलिम छीपा तथा ब्रहम्ण जाति के लोग निवास करते है।लगभग 700 वर्ष पूर्व राजस्थान तथा गुजरात से छीपा यहॉ आकर बस गए थें। छीपा अपने साथ रंगाई तथा छपाई की कला भी लेते आए थे।

मैरवगढ़ में छीपाओं के लगभग 300 परिवार रहते है जिनमें से लगभग 100 परिवार में रंगाई छपाई का कार्य होता है भैरवगढ़ की प्राचीन रंगाई छपाई वस्त्रों में लुगड़ा ,जाजम ,रजाई की खोल प्रसिद्व थें मालवा की मिटटी , क्षिप्रा के जल ने इस कला को यहॉ स्थापित होने में विशेप सहयोग प्रदान किया है। भैरवगढ़ में छपाई कार्य में कार्यरत छपाई कारीगरों का परिश्रमिक भुगतान में विविधता हैं। यहॉ पर प्रति नग के आधार प कार्य अधिक किया जाता है परिश्रमिक भुगतान मे विविधता का कारण विभिन्न प्रकार की वस्त्र छपाई का होना है।

okfVd fiafVx

8 रू. से 25 रू. प्रति नग

Ldhu fiafVx

1.50रू. प्रति मीटर

एक कलर स्कीन का

Cykd fiafVx

20 रू. से 25 रू प्रति नग

jkxu fiafVx

15 रू .से 60 रू प्रति नग

लेकिन रोगन प्रिंटिग का कार्य यहॉ केवल एक दो परिवार द्वारा ही किया जाता है। वस्त्र छपाई कला में कार्यरत छपाई कारीगरों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जो कि उनकी आर्थिक स्थिति को और भी कमजोर कर रहा है। छपाई कारीगरों को कच्चा माल ,मोम, डाई, वेजीटेवल डाई, कपड़ा स्थानीय बाजार में उपलब्ध नही है। डाई अहमदाबाद व बम्बई से आती है। स्थानीय स्तर पर डाई की दो दुकाने उपलब्ध है जिन पर सस्ते किस्म कि व सभी प्रकार की डाई उपलब्ध नहीं है। जलाऊ लकड़ी हेतु सरकारी डिपो उपलब्ध नहीं है। केरोसीन खुले बाजार दुगने दामों पर खरीदना पड़ता है।

## Nikbl grq Cykd&

ब्लॉक पेथापुर, फरूखाबाद पिलखुवा से आर्डर पर आते है। बाहर से आने के कारण ब्लॉक के दामों में बृद्वि हो जाती हे अलवता म.प्र. हस्तशिल्प विकास निगम कार्यालय में ब्लॉक लाइब्रेरी है जो कि ब्लॉक,छपाई हेतु निशुल्क एक सप्ताह के लिए प्राप्त किए जा सकते है।

## eke dh leL;k–

अधिकांश छीपाओ को व्यवसाय चलाने हेतु पूंजी की आवश्यकता है इसके लिए उन्हे साहूकारों से ऋण लेना होता है। जिससे उनकी आय का अधिकांश भाग ऋण चुकाने में चला जाता है। छीपा बैंक की कागजाती विधि से बचने के लिए बैंक से लोन लेना पसंद नही करते।

bUÝkLVDpj dh leL;k& छपाई का अधिकांश कार्य

दीपाओं के अपने पुस्तेनी घरों में किया जाता है। अधिकांश घरों की छते टीन शेड की बनी हुई हे। इन घरों में बिजली, पानी, हवा तथा प्रकाश की उचित व्यवस्था नहीं है बाटिक छपाई के लिए केरोसीन से जलता हुआ स्टोव पास में वस्त्रों को रंगने के लिए जलती हुई भटटी, धूप से तपती हुई टीन की चादर, व पंखा उपरोंक्त समस्याएं मिलकर छपाई कारीगरों की कार्य क्षमता को प्रभावित करती है। तथा इनकी उत्पादन क्षमता घट जाती है।

LokLF; ,o fpfdRlk dh leL;k %–

वस्त्र छपाई कारीगरों को लगातार खडे होकर लम्बें समय तक असामान्य स्थिति में कार्य करने के कारण उन्हें कंधें, कमर, पैरों पीठ मे दर्द की शिकायत हो जाती है।

ekSle dh ekj:– बर्शात के मौसम मे तैयार वस्त्र को सुखाने की समस्या सबसे अधिक होती है। जो किसी भैरवगढ मे पर्याय मात्रा मे टीन शेड उपलब्ध नहीं है जो कि छीपाओं की आर्थिक स्थिति को कमजोर कर देती है।

lkfgR; dk iquvoykdu%–

जयत्री गुप्ता 2009, के अनुसार देश की समृद्ध कलात्मक विरासत है। जिसे शिल्पियों ने जीवित बनाए रखा है। दूसरी ओर शिल्पी तथा उनके परिवार की गरीबी, खराब रहन–सहन ,दयनीय हालत है। जिसे सुधारने की तुरंत आवश्यकता है। इसके लिए जरूरी है कि दैनिक मजदूरी मे वृद्धि करने की ।

इस कारण बहुत से शिल्पी अपनी इस कला को त्याग कर अन्य व्यवसाय में जा रहे है।

भैरवगढ़ प्रिंट ए डाईग यूनिट के अनुसार भैरवगढ़ की चार शताब्दी से भी ज्यादा प्राचीन वस्त्र छपाई कला अब मृत प्रायः हो चुकी है। यघपि म.प्र शासन ने इस शिल्प के उत्थान हेतु कई योजना चलाई।

mn~ns';%–

भैरवगढ़ की आर्थिक स्थिति का परिचय व भैरवगढ़ के छपाई कारीगरों की समस्या का अध्ययन।

न्यादर्श के रूप मे भैरवगढ़ की विभिन्न छपाई रंगाई कार्य में संलग्न 40 कारीगरों का दैव निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया है।

midj.k o fof/k:–

छीपाओं का साक्षात्कार करके तथ्य प्रकशित किए गए एवं तथ्यों से प्राप्त आकड़ों का फलांकन किया गया एवं मास्टर शीट तैयार की गई प्राप्त आकड़ो का विश्लेषण प्रतिशत विधि द्वारा कर परिणाम प्राप्त किया गया।

प्रचार–प्रसार का अभाव प्रचार के लिए किसी प्रकार के विज्ञापन होर्डिग, पोस्टर पूरे शहर में नजर नहीं आते। प्रति वर्षों लाखों की तदाद में आने वाले टूरिस्ट व तीर्थ यात्री को यहॉ की वस्त्र छपाई के बारे में कोई जानकारी उपल्बध नहीं है। हाट–बाजार क्राफट बाजार का भी अभाव है।

fu;fr gsrq vko';d tkudkjh dk vHkko%– विदेशों में हस्त छपित वस्त्रों की अच्छी मांग नियति के संबंध में पूरी जानकारी न होना।

VªkaliksVZ dh leL;k%&

वस्त्र छपाई व्यवसायीओं को अपना तैयार माल भेजने हेतु स्थानीय स्तर पर कोई ट्रांसपोर्ट जैसी पार्सल बुकिंग, अथवा रेल्वे माल बुकिंग की सुविधा उपलब्ध नहीं है। उन्हें किराये के वाहनों से अपना माल उज्जैन तक भेजना पड़ता है जहॉ से वह अपने गत्वंय स्थान तक पहुंचाया जाता है। फलस्वरूप उसकी लागत में बढ़ोतरी हो जाती है।

ekdsZfVax dh leL;k%–

छीपा अपना तैयार माल कहॉ बैचे यह एक बड़ी समस्या है। छपे हुए वस्त्र बिक्री हेतु भैरवगढ़ में कोई शायद शोरूम एम्पोरियम नहीं है। फलस्वरूप छीपाओं को अपनी वस्त्रों की बिक्री हेतु दलालों का सहारा लेना पड़ता है। जो कि बिक्रय मूल्य का 1 प्रतिशत कमीशन लेते है। अतः बाहर के शहरों से प्राप्त आर्डर पर माल तैयार करना पसंद करते है।

| Øa | rS;kj eky fcØh gsrq Hkkjox< esa lqfo/kk | gka ¼izfr'kr½ | ugh ¼izfr'kr½ |
|---|---|---|---|
| 1. | साप्ताहिक हॉट की उपलब्धता | 00 | 100 |
| 2. | विज्ञापन की उपलब्धता | 15.66 | 84.33 |
| 3. | माल की बिक्री हेतु दलाल की आवश्यकता | 92 | 8 |

| भैरवगढ स्थित कारखानों की की स्थिति | |
|---|---|
| टीन शेड कारखाने | 96.99: |
| पक्के कारखाने | 3.01 |
| कुल = | 100 |

प्राप्त आंकडों के अनुसार भैरवगढ मे साप्ताहिक हॅाट की सुविधा नहीं है । 15.66 प्रतिशत छीपा मानते है कि विज्ञापन की उपलब्धता है ।92 प्रतिशत छीपा कहते है कि माल बिक्री हेतु मध्यस्थ की आवश्यकता होती है। और भैरवगढ में 3.01 प्रतिशत ही पक्के कारखाने बने हुए है।

fu"d"kZ& प्राप्त आंकडों से पता चलता है कि भैरवगढ मे छपाई कारीगरों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड रहा है जो कि उनकी आर्थिक स्थिति को कमजोर कर रहा है। जिस कारणवश छपाई कारीगरों का आकर्षण इस व्यवसाय में कम होता जा रहा है जल्द ही छीपाओं की समस्याओं का समाधान करना होगा। जिसमें भैरवगढ वस्त्र छपाई पुर्न प्रसिद्धि प्राप्त करें। व छीपाओं की आर्थिक स्थिति में सुधार हो।

## संदर्भ ग्रंथ

1. Gupta, Jayshree Indian Handicraft & Handloom, worker: life and working condition in village, A. Berief study, ORF working paper series July.
2. http:ll News:web India 123.com/news/articles/India